स्नातक (प्रतिष्ठा)

प्रथम खण्ड

तृतीय व्याख्यान

डॉ० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता, महाविद्यालय,
राजनगर (मधुबनी)

अलंकार (भ्रान्तिमान, सन्देह)

* भ्रान्तिमान :-

भ्रान्तिक अर्थ होइछ 'धोखा' तैं भ्रान्तिमानक अर्थ भेल धोखासँ युक्त ज्ञान। ज्ञानक तीन टा कोटि मानल गेल अछि -

1. प्रमा 2. भ्रम 3. सन्देह।

कोनो वस्तुकेँ ओही रूपमे बूझब प्रमाज्ञान अछि। जेना रस्सीकेँ रस्सीए आ साँपकेँ साँपे बुझब। दोसर वस्तुकेँ दोसर बुझि लेब भ्रम अछि। जेना अन्धकारमे ठूठ वृक्षकेँ देखि आदमी बुझि लेब। दुइ वस्तुक भावनामे कोनो एक पक्षमे निर्णय नहि क सकब सन्देह अछि। जेना अन्धकारमे रस्सीके देखि ठमकि जायब, तारतम्यमे पड़ि जायब जे ई साँप अछि अथवा रस्सी। अतः सादृश्यक कारणे कोनो वस्तुकेँ कोनो दोसर वस्तुक निश्चयात्मक ज्ञान जत कथित रहैत अछि

तत भ्रान्तिमान अलंकार होइछ।

उदाहरण

कुच युगल सरोरुह मुकुल जानि।
द्रुत आवी तकर निकास मानि।
षटपद परली मकरन्द आस
कएलक कर आबि समीप वास॥

एतअ भ्रमर समुदाय द्वारा कुचयुगलकें सरोरुह मुकुल बुझि तथा शीघ्रे ओकर पूर्ण प्रस्फुटनकें जानि मकरन्द आशासँ ओकर समीप आबि वास करबाक कारणेँ भ्रान्तिमान अलंकार भेल।

* सन्देह :-

प्रस्तुतमे अप्रस्तुतक संशयकें सन्देह अलंकार कहल जाइत अछि। सन्देह सतत सादृश्यमूलके होइत अछि। पुड़ीमे डाँटक अथवा रेलगाड़ीमे मनुष्यक सन्देह नहि होइछ कारण दोहु वस्तुमे परस्पर कोनो सादृश्य नहि अछि।

उदाहरण

सुरपति धनु की पिरवल फूटे?
मालति भमरए बलाइति उड़े?

भाल की कोमल विधु अधखंड ?
करिवर कर किय ओ भुजदण्ड ?

सन्देह तीन प्रकारके होइछ :-

1. शुद्ध :- जाहिमे आँत-आँत धरि संदेह बनल रहय।

2. निश्चय मध्य :- जकर आदि एवं अन्तमे तँ सन्देह किन्तु मध्यमे निश्चय भऽ जाय।

3. निश्चयान्त :- जत आरम्भमे तँ सन्देह रहय किन्तु अन्तमे निश्चय भऽ जाय।

स्रोत :- मैथिली काव्यशास्त्र - डा० दिनेश कुमार झा

Scanned with CamSc